काजरी में नाबार्ड की वित्तीय परियोजना के तहत प्रक्षेत्र दिवस–सह–कार्यशाला का आयोजन

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी), जोधपुर में 3 नवंबर 2026 को शुष्क क्षेत्रों के किसानों के लिए कृषि में उपयोग हेतु वर्षाजल और सौर ऊर्जा संचयन मॉडल के प्रर्दशन पर एक प्रक्षेत्र दिवस–सह–कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. आर. रवि बाबू ने उद्घाटन सत्र में वैज्ञानिक विधि और क्रियान्वयन के आधार पर एचडीपीई–लाइन वाले खेत तालाब मॉडल को विकसित करने के लिए काजरी वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की। यह प्रक्षेत्र दिवस नाबार्ड द्वारा वित्तपोषित परियोजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य शुष्क कृषि को टिकाऊ बनाने के लिए वर्षाजल और सौर ऊर्जा संचयन के मॉडल विकसित करना और शुष्क क्षेत्र के किसानों की क्षमता का निर्माण करना है।

कार्यक्रम के दौरान, काजरी के प्रधान वैज्ञानिक और परियोजना के प्रधान अन्वेषक, डॉ. दीपेश माचीवाल ने बताया कि संस्थान में वर्षाजल संचयन के दो अलग–अलग मॉडल विकसित किए गए हैं, एक एकल तालाब का मॉडल, और दूसरा श्रृंखलाबद्ध प्रणाली में दो तालाबों का मॉडल, जिसमें कम वर्षा होने की स्थिति में जल का वाष्पीकरण भी कम होता है। इसके अलावा, मॉडल द्वारा एकत्रित वर्षाजल को कृषि में सिंचाई के लिए उपयोग करने हेतु स्प्रिंकलर सिंचाई विधि के जरिए 5 हॉर्स पॉवर के सबमर्सिबल पंप के संचालन हेतु 5 किलोवाट क्षमता वाले सोलर पैनल लगाए गए हैं। परियोजना के अगले चरण में वर्षाजल संचयन के इस मॉडल को किसानों के खेतों तक पहुँचाना है, जिससे शुष्क क्षेत्रों की खेती में जल और ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सकेगा। डॉ. माचीवाल ने यह भी जानकारी दी कि अल–नीनो वर्ष होने के बावजूद वर्ष 2026 के दौरान काजरी संस्थान में 38 लाख लीटर वर्षाजल को सहेज कर तीन तालाबों को उनकी उच्चतम भंडारण क्षमता तक भर पाना मॉडल की सफलता को दर्शाता है। उन्होनें वर्षाजल संग्रहण एवं संचयन की शुष्क क्षेत्र में बढ़ती संभावना के पीछे जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप वर्षा की तीव्रता में हुई बढ़ोतरी को मुख्य कारण बताया। इस वर्ष 2 अगस्त को हुई बारिश की तीव्रता लगातार लगभग 20 मिनट तक 50 मिलीमीटर प्रति घंटा से अधिक दर्ज की गई, एवं अधिकतम तीव्रता 120 मिलीमीटर प्रति घंटा पाई गई, जिससे 77 मिलीमीटर बारिश ने ही 38 लाख लीटर क्षमता वाले तीन तालाबों को जल से पूर्णरूप से भर दिया।

कार्यक्रम में प्राकृतिक संसाधन विभाग के अध्यक्ष, डॉ. प्रियब्रत सांतरा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें काजरी द्वारा विभिन्न मॉडलों के माध्यम से वर्षाजल संचयन और सौर ऊर्जा संचयन के क्षेत्र में प्रगति के बारे में अवगत किया। कार्यवाहक निदेशक, डॉ. एस.पी.एस. तंवर ने शुष्क कृषि क्षेत्रों, विशेष रूप से बिजली की अनुपलब्धता वाले वर्षा–आधारित खेती के क्षेत्रों, में वर्षाजल संचयन और सौर पम्पिंग प्रणालियों की आवश्यकता के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में किसानों और राज्य के विभिन्न विभागों के अधिकारियों सहित लगभग 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में नाबार्ड, जोधपुर के जिला विकास प्रबंधक श्री मनीष मंडा के साथ–साथ राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान–जोधपुर के प्रभारी, डॉ. सौरभ नेमा, आईआईटी जोधपुर के डॉ. अभिनव गुप्ता, जलग्रहण विकास एवं मृदा संरक्षण विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता, इंजीनियर भागीरथ बिश्नोई, और केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड की जल–भूवैज्ञानिक सुश्री रीना बोराना मौजूद रहें। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रधान वैज्ञानिक एवं सह–प्रधान अन्वेषक, डॉ. हरि मोहन मीना ने किया, और प्रधान वैज्ञानिक एवं सह–प्रधान अन्वेषक, डॉ. सुरेंद्र पूनिया ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।



